ईश्वरीय भाग्य की महिमा

सभी मनुष्य आत्मायें आत्मिक नाते से एक ईश्वर की अमर सन्तान होतें हुए भी भाग्य विधाता प्रभु परमात्मा से अविनाशी भाग्य की प्राप्ती का गुह्य राज कुछ और ही है।क्यौंकि भगवान अपने बच्चो को कब और कैसे भाग्य देते है और उस भाग्य की महिमा और गरिमा क्या है यह सभी ज्ञान प्राप्त होने के वाद ही हर व्यक्ति उसकी प्राप्ति के लिए लालायित तथा आकर्षित होगा। अन्यथा उसे इसमें कोइ खास वात नजर नही आयेगी।

ईश्वर अपने सन्तान सालीग्रामों को अविनाशी भाग्य अपने परमधाम में नहीं बाँटते है ।उन्हे सर्व आत्माओं को भगय बाट्ने के लिए स्वंय निरञ्न,निराकार परम ज्योति स्वरूप होते हुए भी साकार मानविय तनकाआधार लेना पडता है।वह कोई किसी माता के गर्भ में आकर संसारिक जन्म लेकर नहीं अपीतु दिव्य प्रवेश होकर आते है।जिसे ही ईश्वर का अवतार कहा जाता है। वही परमात्मा शिव की अवतरण की वेला शिवरात्री का समय है,जो कल्पान्त का समय पुरूषोत्म संगम युग है।इस वेला को ही कलीयुग का अन्तिम प्रहर और सत्ययुग की शुभारम्भ की बेला हीरा तुल्य संगमयुग का समय कहा जाता है।जिस तन मे ईश्वर का अवतार होता है वह प्रजापिता ब्रह्मा का तन है,वही वास्तव में सृस्टि के आदी पूरूष होने के कारण सृस्टि कर्ता के रूपमें ईश्वर द्वारा प्रयुक्त होते है।

ईश्वर पिता परमात्मा ब्रह्मा के मुख से बोल्ते ,उनके आंखो से देख्ते और उनके कानो से सुनते और उन के ही हाथो से दुआं और वरदान देते है। ब्रह्मा द्वारा जो आत्मा परमात्मा का अलौकिक राज और रहस्य खोलकर आत्मा का संबन्ध स्वंय से कराते है। आत्मा का पारलौकिक संबंध सहज राजयोग साधना विधि से कराते है।आत्मा का ज्ञान का तीसरा नेत्र खोल्ते है,जिससे आत्मा स्वंय से सुपरिचित होती है।तभी आतमा नीज गुण, विशेषत, स्वभाव तथा स्ंस्कार के बारे में अनुभव करने लगती है।आत्मा तव स्वंको परमात्मा का संतान हुँ समझने लगती है और हर कर्म और व्यवहार में ईश्वरीय आदेश ,निर्देश और उपदेश की परिपालना करने लगती है।इस जीवन शैली को ही वास्तव में ईश्वरीय श्रीमत के अनुगामी बनना कहा जाता है। तभी हर कर्म और व्यवहार आत्मा स्वंय के लिए सुखदाई और सकारात्मक परिणामुखी तो होते ही है,अपितु उसके द्वारा सारा परिवार, समाज , देश एवं विश्व भी लाभान्वित होता है।उसके जीवन के ज्योति जगने से न केवल उसका जीवन आलोकित होता है अपितु उसके ,द्वारा अनेको का कल्याण हो जाता है।

तो जो ब्रह्मा के द्वारा ईश्वर की पालना मिलती है उसे ही वास्तव में परमात्म पालना कहा जाता है।सांसारिक पालना लौकिक मां - बाप से पाना तो अलग चीज है,जो हर को ई शीशु पाता है।चाहे वह राजा का बेटा हो या रंक का,उसमें सुख वैभव और समपन्नता की कमी वैसे तो अवश्य होती ही है लेकिन है तो मनुष्यों कि ही पालना। परन्तु परमात्म पालना तभी ही मिल सकती है जब व्यक्ति ब्रह्मा के मुखारविन्द द्वारा दिया गया सत्य ज्ञान के आधार पर स्वंय को देह नहीं अपितु अविनाशी आत्मा एवं चैतन्य ज्योति स्वरूप

ब्रह्मा की मुखवंशावली सन्तान ब्रह्माकुमार एवं ब्रह्मा कुमारी के रूप में स्वंय को ईश्वरीय संतान समझकर अपना जन्म सिध्द अधिकार की प्राप्ति ब्रह्मा के द्वारा ईश्वरीय पिता से करती है।न केवल ईश्वर पिता अपितु माता बन्धु सखा,स्वामी ,साथी, संगी मित्र समबन्धि आदी सर्व संबन्धो की प्राप्ति की साकार में अनुभुति कराते है।प्रात:उठते ही माता- पिता , शिक्षक, सतगुरू, मीत्र ,सखा ,संगी आदी हर समबन्ध की भासना ब्रह्मा के ही द्वारा देते है ।इस पालना से जो चरम सुख और सन्तुस्टि की प्राप्ति आत्माओं को होती है वह कोइ व्यक्ति और व्यक्तिव को तीनो लोक और चारो युग में मिल नही सकती है।इसलिए यह परमात्म पालना ऐसी दुर्लभ और आव्दित्य पालना है जो केवल ब्रह्मा बत्स सच्चे ब्राह्मणो को ही नशीव होती है।इस पालना में ही अति इन्द्रिय सुख की सच्ची दिव्य अनुभुति जीवन में हो सकती है। जो कल्पान्त के समय ईश्वरीय वरद युग योगियों को ही होती है।

केवल परमात्म पालना के ही वात नही है,इसमें दुसरी महत्वपुर्ण यह भी है कि जिसे परमात्म पढाई कहा जाता है।ऐसा सत्य ज्ञान जो प्राचीन वेद, शास्त्र,पुराण ,उपनिषद का सच्चा सार समाहित ज्ञान होता है।जिससे ही सारे ज्ञान के राज और रहस्य खुल जाते है।आत्मा मे ऐसी विज्ञता और दिव्यता आने लगती है कि उस के सारे अज्ञान और अन्धकार समाप्त होकर जीवन आलोकित हो जाता है। इस ज्ञान से ही कर्म ,विकर्म ,और अकर्म के साथ साथ तीनो लोक तीनो काल एवं चारो युग के राज और रहस्य से व्यक्ति सु परिचित हो जाता है।आत्मा और परमात्मा का अनादी अविनाशी समबन्ध की पहचान ने के साथ- साथ जीवन को ऐसे महत्वपूर्ण और बहुमूल्य ज्ञान रत्न प्राप्त होते है।जिससे उसका जीवन भरपुर और समपन्न होता है।तभी उसे जीवन की पूर्णता का आभास होने लगता है।ऐसी पढाई जिससे लोक परलोक के सभी राज के बारे मे आत्माको बोध हो जाता है।इसे ही परमात्म पढाई का परम शौभाग्य कहा जाता है।

अन्त मे जब आत्मायें परमात्म पालना में पलने लगती है।परम पढाई से विज्ञ और अनुभवी हो जाते है तभी ही उनकी स्थिति इस लोक में रहते हुए भी विदेही नष्टोमोहा एवं साक्षी भाव में रह सकते है।जीवन सभी कमी कमजोरीयों तथा कर्म बन्धनों से मुक्त होने लगता है।हर कर्मो में अलोकिकता और दिव्यता की अव्यता होने के कारण पवित्रता से सुगन्धित एवं शुशोभित हो जाता है,तव वह व्यक्ति सांसारिक कर्म और व्यवहार से अलौकिक और अलग लगने लगता है। वास्तव में वही अर्जुन अर्थात ईश्वरीय ज्ञानार्जुन करने वाला कुशल धनुर्धर अर्थात इश्वरीय ज्ञान और पालना का पात्र है। वही वास्तव में ईश्वर प्रति आस्थावान सच्चा आस्तिक एवं निश्चय बुद्धि है उसे ही ईश्वरीय वरदान और दुआएँ स्वत: मिलती हैं। ऐसे निश्चयबुद्धि को ही ईश्वर का विजयी भव का वरदान प्राप्त होता है। उसके ही सारे अनिष्ट समाप्त करने के लिए ईश्वर तत्पर

और तैयार रहते हैं। वही परमात्म वरदानों की मालाओं से नित्य और निरंतर सुसज्जित रहता है। वही ईश्वरीय वरदानों का सुपात्र एवं योग्य वत्स है उसे ही सहज राजयोगी अर्थात ईश्वर के अंग संग रहकर जीवन के हर कर्म और व्यवहार करने वाला दिव्य पुरूष कहा जाता है। इस प्रकार ईश्वर के हांथों में अपना हांथ और उनके साथ रहकर जीवन के प्रत्येक कर्म और व्यवहार को अलौकिक कर्म लीला रूप में जीवन लीला की भूमि का निर्वाह करने वाला व्यक्ति ही ईश्वरीय वरदानों की मालाओं से हर घड़ी सजा सजाया रह सकता है। उसकी ही प्रकृति दासी होती है। उसके ही चरण सर्व प्राप्ति युक्त हैं और वही विश्व सार रूप मक्खन और मलाई खाकर जीवन को गायन योग्य पूजन योग्य और कीर्तिवान बनाकर सारे संसार में भागवत चरित्र की भूमिका अदा करने में सफल हो सकता है। तब ही तुम्ही से खाऊं, तुम्ही से बैठु, तुम्ही से बातें करूं,और तुम्ही से जीवन के कर्म और व्यवहार करो कि अपार सुख और संतुष्टि की चरम सुखानुभूति कर सकता है, यही है वही परमात्म प्राप्ति करने वाले महान आत्माओं की ईश्वरीय परम सौभाग्य प्राप्ति की स्थिति जो अपने अंतिम सम्पूर्ण कर्मातीत स्थिति प्राप्त कर भविष्य में विश्व महाराजन श्रीनारायण और विश्व महारानी श्रीलक्ष्मी बनने का परम सौभाग्य भी प्राप्त करते हैं । इस प्रकार सृष्टि के तैंतीस कोटि देवी-देवताओं ने ही भाग्य विधाता परमात्मा पिता से ब्रह्मा बाबा के द्वारा साकार में ही यह पदमापदम सौभाग्य प्राप्ति की है। जिससे ही उन्हों ने न केवल एक जन्म भाग्य और सौभाग्य से सम्पन्न रहे अपितु इक्कीस जन्म तक इस अविनाशी भाग्य का मक्खन खाकर वह स्वर्णिम युग को प्राप्त हुए। यही है वह ईश्वरीय भाग्य की गरिमा और महिमा जिससे ही मुक्ति और जीवनमुक्ति भी ईश्वरीय जन्म सिद्ध अधिकार प्राप्त हुआ इसलिए ईश्वरीय भाग्य की अपार महिमा को जानकर ऐसे भाग्य की प्राप्ति के लिए स्वयं को इस लायक बनाना ही अपने जीवन के न केवल एक जन्म अपितु जन्म-जन्मांतर के लिए अधिकारी बनना है यही जीवन की सच्ची-सच्ची सार्थकता है अभी नहीं तो कभी नहीं।

- ब्रह्माकुमारीज् वार्ता फिचर्स
www.bkvarta.com